राष्ट्रीय कार्यशाला *''प्राचीन भारत में मृदभाण्ड परंपरा एवं निर्माण तकनीक''* विषय पर जनवरी माह (15–21 जनवरी 2023) को एक सप्ताह के राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणासी के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की Emeritus Professor डॉ. विभा त्रिपाठी एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. जे.एन.पॉल एवं एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ौदा के प्रो. के.कृष्ण जैसे अन्तरराष्ट्रीय प्रसिद्धी के विद्वानों के व्याख्यान से प्रतिभागी लाभान्वित हुये। इस कार्यशाला के भारत के 13 प्रदेशों से 74 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की।

Directorate of Culture
आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में
राष्ट्रीय कार्यशाला

कहा कि जहां-जहां ग्रीष्मकालीन धान कर सकेगा।

मृदभांडों की खोज सभ्यता को जानने का आधार : डा. विभा

रायपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। मृदभांड परंपराएं पुरातन सभ्यता और संस्कृति को जानने-समझने का मुख्य आधार है। आप देखें कि सैकड़ों-हजारों वर्ष पूर्व जितनी भी पूर्वकालीन सभ्यता को आज हम जान पाए हैं। इनमें मृदभांड परंपराओं के माध्यम से पुराने मिट्टी के बर्तनों की शैली, इतिहास के आधार पर ही है। नईदुनिया से बातचीत के दौरान बीएचयू, वाराणसी की एसोसिएट प्रोफेसर व 200 से अधिक शोध कर चुकी डा. विभा त्रिपाठी ने ये बातें पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में हो रहे सात दिवसीय कार्यशाला में कही।

डा. त्रिपाठी ने बताया कि अध्ययन के दौरान उनका रूझान शुरू से पुरातन संस्कृति सभ्यता की ओर रहा। उच्च शिक्षा के दौरान वर्ष- 1973 में मृदभांडों को लेकर पीएचडी की उपाधि ली। उस दौर से आज 50 वर्ष हो गए शोध, अध्ययन और

व्याख्यान देती डा. विभा त्रिपाठी। • नईदुनिया

- 200 शोध प्रकाशित करने वाली बीएचयू की एसोसिएट प्रोफेसर डा. विभा त्रिपाठी पहुंची रायपुर
- नईदुनिया से बातचीत में पुरातन सभ्यता और संस्कृति पर रखी अपनी बात

अध्यापन का कार्य जारी है। डा. विभा ने कहा कि जैसे-जैसे पुरातात्विक उत्खनन के दौरान मिट्टी के बर्तन और उपयोगी सामान मिले। अध्ययन के बाद सभ्यता, संस्कृति से रूबरू होते गए। उदाहरण के तौर पर देखें कि लोथल पुरास्थल गुजरात में उत्खनन में मिले मिट्टी के बर्तन 2500 ईशा पूर्व की है, जो सारस, लोमड़ी, प्यासा कौआ की कहानी को बर्तनों में उकेर कर बताया गया है। यानी आज जो कहानियां प्रचलित है या बर्तन उपयोग कर रहे हैं। इसके आकार प्रकार सैकड़ों वर्ष पुराने हैं। पहले मिट्टी के बर्तन उपयोग होते थे। धीरे-धीरे धातुओं की बर्तनों ने जगह ले लिया। इससे बर्तन बनाने की पुरानी और विकसित शैली विलुप्त होती गई। आज वैसे कारिगरों की कमी है।

छत्तीसगढ़ में अपार संभावनाएं: डॉ. विभा ने कहा कि जिस तरह से छत्तीसगढ़ का इतिहास रहा है। इसका जिक्र रामायण और महाभारत काल से हो रहा है। ऐसे में यदि सही तरह से काम हो तो कई तरह की जानकारियां सामने आएगी। मुझे लगता है अभी तक छत्तीगढ़ में पुरातात्विक दृष्टकोण से बेहतर काम नहीं हो पाया है।

200 से अधिक शोध व 10 पुस्तकें भी हो चुकी है प्रकाशित: डा. विभा त्रिपाठी बताया कि 50 वर्षों के अनुभवों में अब तक 200 से अधिक शोध राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हुए हैं। वहीं 10 पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी है। यह भी देशभर के मृदभांड परंपराओं पर ही किया गया है।

छात्रों को मिला प्रशिक्षण: पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में पुरातत्व अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष डा. निलेश कुमार मिश्र ने बताया कि प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला में प्राचीन भारत में मृदभांड परंपराएं व निर्माण तकनीक विषय पर सात दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन भी व्याख्यान हुआ। इसके बाद छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया है।

CS Scanned with CamScanner

इतिहास की बात प्राचीन भारत में मिट्टी के बर्तनों की परंपराएं और तकनीकों पर कार्यशाला

तरीघाट, डमरू और रीवा में शुंग कुषाण काल की मिट्टी

ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

रायपुर . दुर्ग जिले के पाटन के तरीघाट, रायपुर में डमरू और रीवा गांवों में शुंग कुषाण काल की मिट्टी के बर्तन मिले हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि इन क्षेत्रों में कुषाण काल के लोगों का जीवन यापन यहां प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से चल रहा था। रविवि में चल रहे प्राचीन भारत के मिट्टी के बर्तनों की परंपराओं और तकनीक कार्यशाला के तीसरे दिन शुंग कुषाण काल के मिट्टी के बर्तनों पर परिचर्चा हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जेएन पाल ने ऐतिहासिक काल के लाल रंग के मिट्टी के बर्तनों की खासियत बताई।

बनावट पर हुई परिचर्चा

कार्यशाला में अतिथियों ने एक-एक कर निर्माण तकनीकों पर व्याख्यान दिया। प्रोफेसर कमलाराम बिंद ने शुंग-कुषाण काल के मिट्टी के बर्तनों को लेकर कहा, पहली शताब्दी ईसवीं पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसवीं पूर्व का है। इनमें छिड़कदानी, टोटीदार पात्र, दवाद (ईकपॉट) घुंडीदार ढक्कन अन्य बनावट होते थे। महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी बड़ौदा के प्रोफेसर के कृष्णनन के द्वारा मिट्टी के बर्तनों के तकनीक पर प्रकाश डाला।

आज सिद्धांतों और तकनीक पर चर्चा

गुरुवार को रूहेल खंड विवि के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग के अनूप रंजन मिश्र मिट्टी के बर्तनों से संबंधित सिद्धांतों और तकनीकियों को बताएंगे। दूसरे सत्र में प्रोफसर के कृष्णनन बर्तनों के वैज्ञानिक विश्लेषण और उनकी शार्टलिंग के बारे में व्याख्यान देंगे।

Scanned with CamScanner

National Workshop

Pottery Tradition in Ancient India and Its Making Technique

(16-22 January2023)

INVITATION

Inaugural Session

Time- 11:00am to 12:30pm

Chief Guest

Prof. Vibha Tripathi

Former HoD, & Emeritus Professor Dept. of AIHCA, BHU, Varanasi

Guest of Honour

Prof. L.S. Nigam

Former HoD, Dept. of AIHCA PRSU, Raipur & Former Vice- Chancellor
Shankracharya University, Bhilai

Prof. J. N. Pal

Former HoD, Dept. of AIHCA, University of Allahabad, Prayag RaJ

Dr. P. C. Parakh

Deputy Director, Department of Culture & Archaeology
Govt. of Chhattisgarh

Presided By

Prof. Keshari Lal Verma

Vice-Chancellor
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

REGISTRAR
Dr. Shailendra Kumar Patel

HoD
Prof. Priyamvada Shrivastava

Coordinator

Dr.Nitesh Kumar Mishra

Venue- Arts Building, Seminar Hall, Pt. Ravishankar shukla University, Raipur